ं विद्या- भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

नीतू कुमारी, वर्ग- चतुर्थ, विषय- हिंदी

दिनांक -30--06-2021 एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

पाठ- 7 पुष्प की अभिलाषा

सुप्रभात बच्चों,

सुप्रभात बच्चों,

पाठ परिचय-'एक भारतीय आत्मा' के विरुद्ध से विभूषित श्री माखनलाल चतुर्वेदी की यह छोटी होने के बावजूद देशभक्ति की गंभीर भावना से ओतप्रोत तथा प्रसिद्ध है। इसकी लोकप्रियता इतनी है कि देश भक्ति की चर्चा जहां कहीं भी होती है, शहादत को आदर देने के लिए इनकी अंतिम पंक्तियों को उद्धृत किया जाता है ।यह कविता अवश्य स्मरणीय है।

चाह नहीं मैं सुरबाला के,
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी माला में,
बिंध, प्यारी को ललचाऊँ।।

चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।।

मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।।

—श्री माखन लाल चतुर्वेदी

गृहकार्य-दिए ,गए कविता याद करें।